ISBN 978-81-237-3506-1
पहला संस्करण : 2001
बारहवीं आवृत्ति : 2019 *(शक 1940)*

Bada Moorkh Kaun *(Hindi)*

₹ 35.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
Website: www.nbtindia.gov.in



नेहरू बाल पुस्तकालय

बड़ा मूर्ख कौन

(अफ्रीकी लोककथाएं)

श्रीकृष्ण कुमार त्रिवेदी

चित्रांकन

आर्य प्रहराज



nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

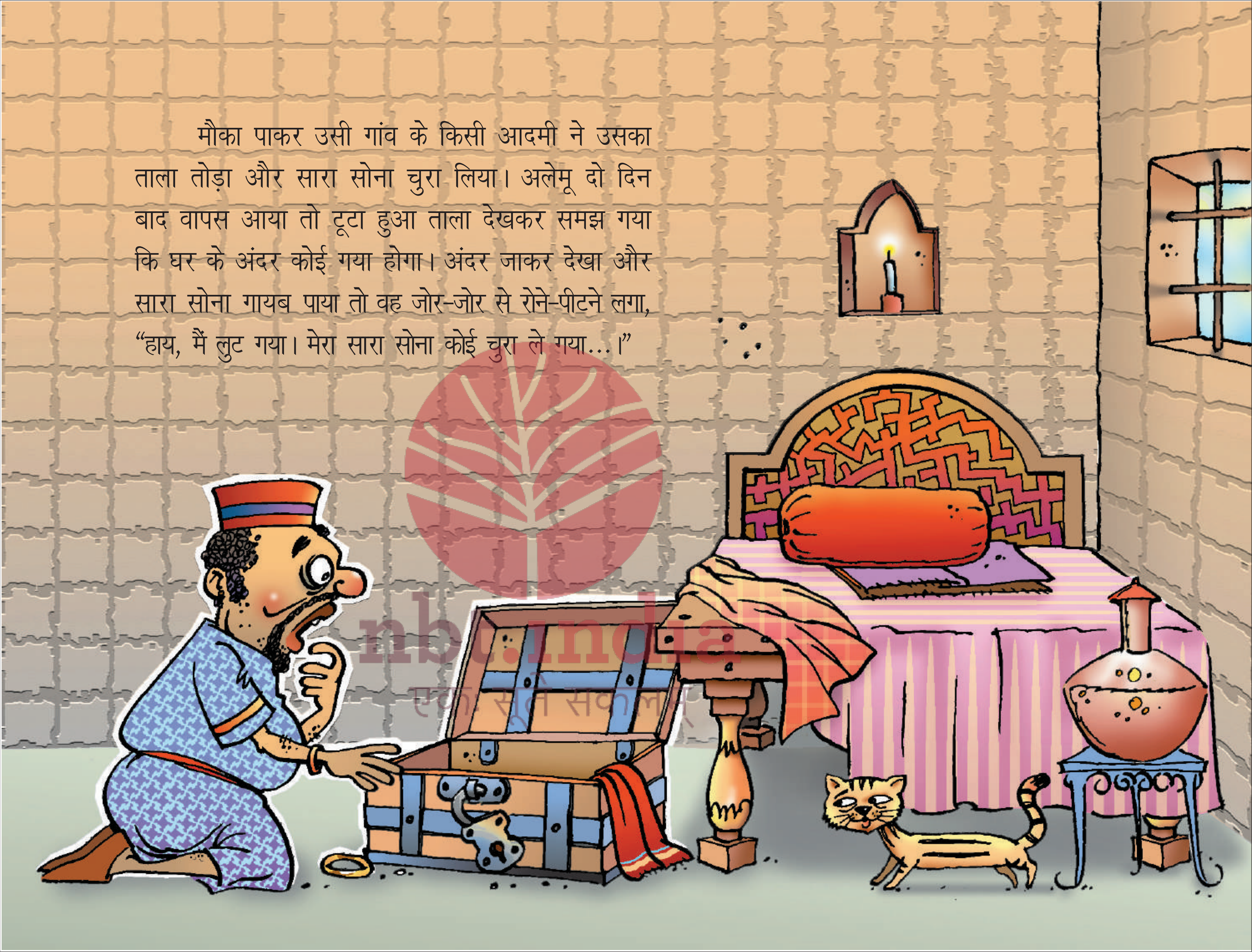
गधे की पूंछ

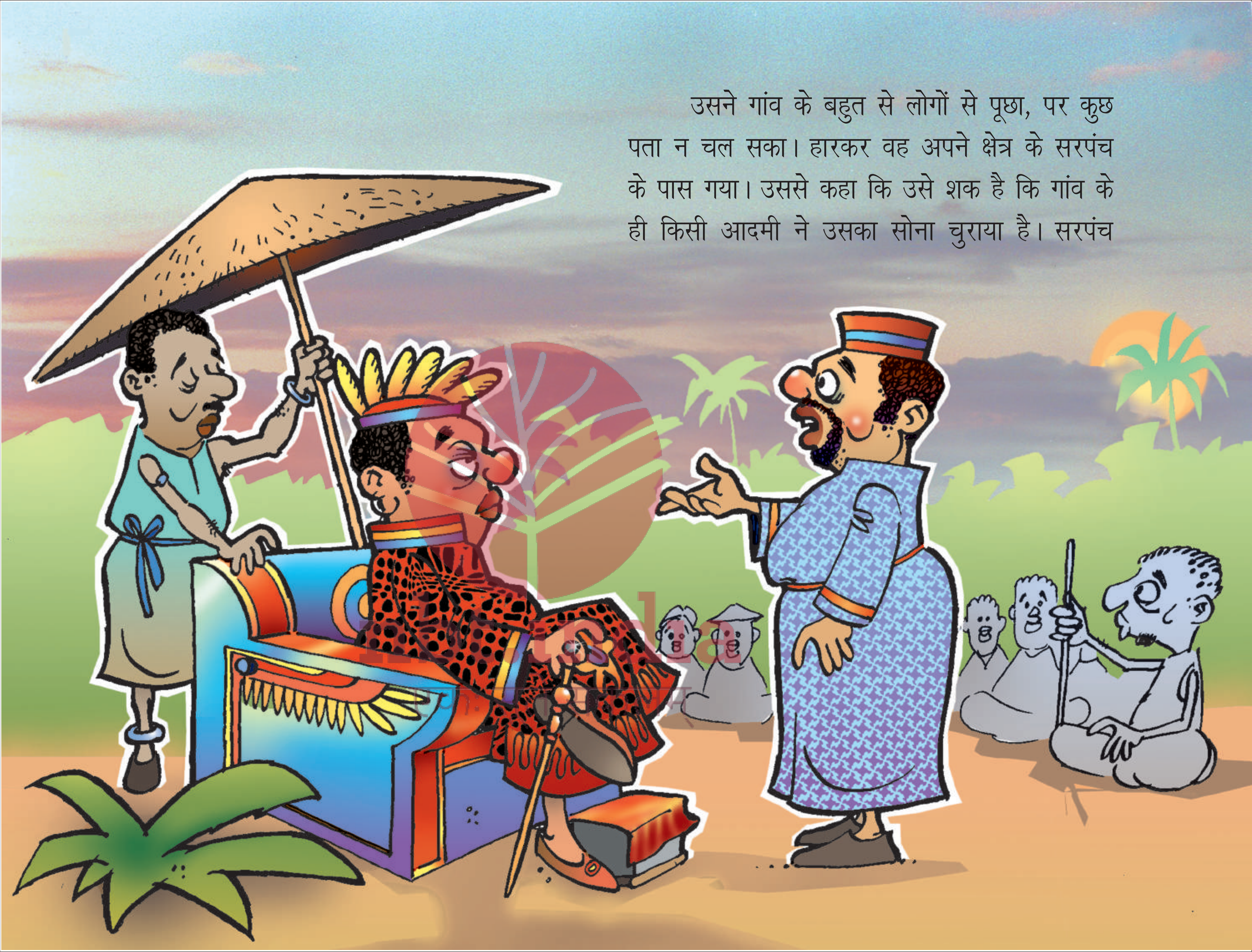


एक गांव में अलेमू नाम का एक धनी व्यापारी रहता था। वह अच्छा आदमी था और गरीबों की हमेशा मदद करता था। आने वाले मेहमानों का दिल से स्वागत-सत्कार करता था। उसके पास बहुत-सा सोना था। लेकिन वह उसे बैंक में न रखकर लकड़ी के एक बक्से में बंद करके अपनी चारपाई के नीचे रखता था। घर में अकेला था, इसलिए कहीं जाना होता तो ताला लगाकर जाया करता था।

एक दिन कहीं जाने के लिए वह टट्टू पर सवार होकर निकल पड़ा।

मौका पाकर उसी गांव के किसी आदमी ने उसका ताला तोड़ा और सारा सोना चुरा लिया। अलेमू दो दिन बाद वापस आया तो टूटा हुआ ताला देखकर समझ गया कि घर के अंदर कोई गया होगा। अंदर जाकर देखा और सारा सोना गायब पाया तो वह जोर-जोर से रोने-पीटने लगा, "हाय, मैं लुट गया। मेरा सारा सोना कोई चुरा ले गया...।"





उसने गांव के बहुत से लोगों से पूछा, पर कुछ पता न चल सका। हारकर वह अपने क्षेत्र के सरपंच के पास गया। उससे कहा कि उसे शक है कि गांव के ही किसी आदमी ने उसका सोना चुराया है। सरपंच

कुछ देर तक सोचता रहा, फिर उसने कहा कि वह चोर को पकड़ेगा और उसका सोना वापस दिलाएगा। सरपंच अलेमू के गांव गया। वहां उसने एक तंबू लगवाया और उसके अंदर एक गधा बंधवा दिया। फिर उसने सबसे छुपाकर उस गधे की पूंछ पर इत्र की एक शीशी उड़ेल दी और गांव के सारे लोगों



को बुलवाकर कहा, “किसी ने अलेमू का सोना चुरा लिया है। मुझे शक है कि चोर इसी गांव का है। तुम लोग एक-एक करके तंबू में जाओ और गधे की पूंछ छूकर आओ। जो चोर होगा उसके छूते ही गधा रेंकेगा।”

सब ने वैसा ही किया। पर सबके अंदर हो आने पर भी गधा नहीं रेंका तो गांव वालों ने मान लिया कि चोर किसी और गांव का रहा होगा। लेकिन सरपंच ने उन सब लोगों को एक लाइन में खड़ा किया और एक-एक करके सबके हाथ सूंघे। हाथ सूंघते-सूंघते उसने अचानक एक आदमी को पकड़ लिया, “चोरी तुमने की है।”

वह आदमी एकदम घबरा गया। लेकिन फिर संभलकर बोला, “नहीं, मैं चोर नहीं हूं। मेरे पूंछ छूने पर गधा नहीं रेंका।”

सरपंच ने डांटा, “तुम झूठ बोल रहे हो। तुमने तो उसकी पूंछ छुई ही नहीं।”

“नहीं, मैंने छुई थी उसकी पूंछ।”

“उसकी पूंछ में इत्र लगा था। तुमने पूंछ छुई होती तो सबके हाथों की तरह तुम्हारे हाथ से भी सुगंध आ रही होती।” सरपंच ने सबसे कहा, “तुम लोग अपना हाथ सूंघो और इसका भी।”

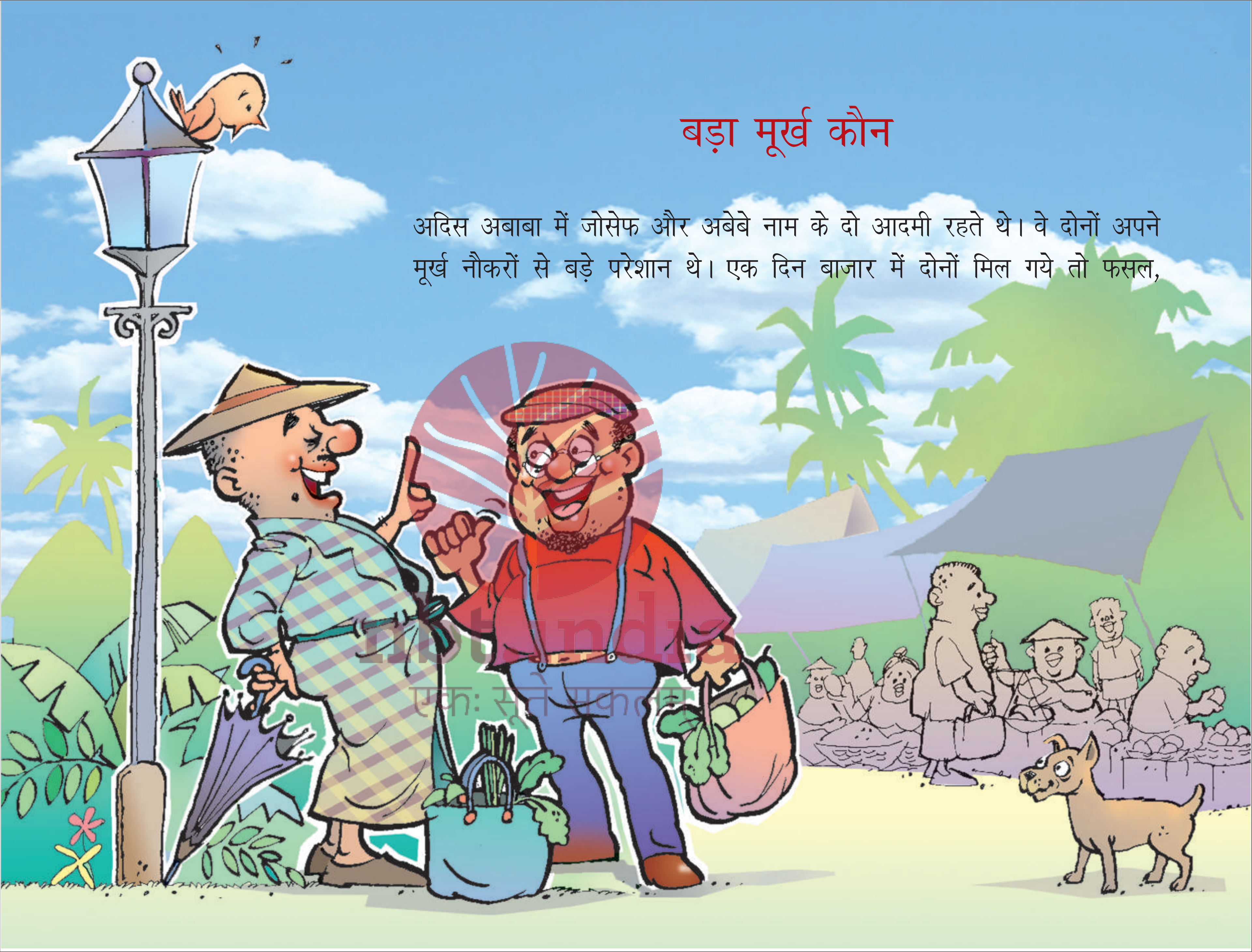
सबने अपना-अपना हाथ सूंघा तो उसमें इत्र की सुगंध थी। पर जब उन्होंने उस आदमी का हाथ सूंघा तो उसमें सचमुच ही सुगंध नहीं थी।

चोर ने जान लिया कि वह पकड़ में आ गया है। उसने अपना अपराध स्वीकार कर लेना ही ठीक समझा। अलेमू का सारा सोना वापस मिल गया। उसने इस खुशी में सरपंच को और सारे गांव को एक बढ़िया दावत दी।



बड़ा मूर्ख कौन

अदिस अबाबा में जोसेफ और अबेबे नाम के दो आदमी रहते थे। वे दोनों अपने मूर्ख नौकरों से बड़े परेशान थे। एक दिन बाजार में दोनों मिल गये तो फसल,



परिवार, मौसम आदि की बातें करते-करते नौकरों की मूर्खता पर आ गये।

जोसेफ ने कहा, "मेरा नौकर इतना मूर्ख है कि वह रोज मुर्गों की हड्डियां क्यारियों में गाड़ता है और सोचता है कि उनसे चूजे उगेंगे।"

अबेबे ने कहा, "मेरा नौकर तो और भी मूर्ख है। वह सोचता है कि चिड़ियों के रोने से जो आंसू निकलते हैं उनसे ही वर्षा होती है।"

अब वे दोनों अपने-अपने नौकर को दूसरे से बड़ा मूर्ख सिद्ध करने लगे। दो घंटे तक बहस होती रही। लेकिन किसी ने भी दूसरे के नौकर को बड़ा मूर्ख नहीं माना। अंत में सोचा गया कि उनकी परीक्षा लेकर फैसला किया जाये।

जोसेफ ने कहा, "कल तुम अपने नौकर को साथ लेकर सवेरे आठ बजे मेरे घर पर आ जाओ। हम दोनों को बेवकूफी वाला एक-एक काम देंगे। जो उसे करेगा, वही बड़ा मूर्ख होगा।"

सवेरे जोसेफ के घर पहुंचते ही अबेबे ने अपने नौकर से कहा, "दौड़कर घर जाओ और देखो कि मैं वहां हूं या नहीं। कुछ जरूरी बात करनी है।"

उसका नौकर चला गया। अब जोसेफ ने अपने नौकर को पचास रुपये के बराबर एक नोट दिया और कहा, "मेरे लिए एक नयी कार खरीद कर लाओ।"

नौकर नोट लेकर तेजी से चल पड़ा।

कोई दो घंटे बाद दोनों नौकर सड़क पर एक-दूसरे से मिले। दोनों बहुत नाराज थे। जोसेफ का नौकर बोला, "मेरे मूर्ख मालिक ने मुझे नयी कार खरीदने के लिए कहा है और पैसे भी दिए हैं। लेकिन उसने यह तो बताया ही नहीं कि कार किस रंग की चाहिए। अब मैं क्या खरीदूं?"

अबेबे के नौकर ने कहा, "मेरा मालिक तो और भी मूर्ख है। उसने मुझसे कहा कि घर जाकर देखूं कि वह वहां है या नहीं। क्या वह टेलीफोन करके पता नहीं कर सकता था?"



दोनों नौकर लौटकर जोसेफ के घर पहुंचे तो मालिकों ने मान लिया कि वे दोनों एक-दूसरे से बढ़कर मूर्ख हैं।



बंदर और कछुआ

एक झोंपड़ी में एक कछुआ अपने बच्चे के साथ रहता था। कछुआ बड़ा आलसी था और कोई भी काम नहीं करता था। थोड़ी ही दूरी पर एक किसान बंदर का खेत था। कछुआ बंदर से उधार ले-लेकर खाता रहता था और पैसा देने के नाम पर कोई न कोई बहाना बना देता था। उसके पास कुछ था ही नही; देता भी तो क्या देता!

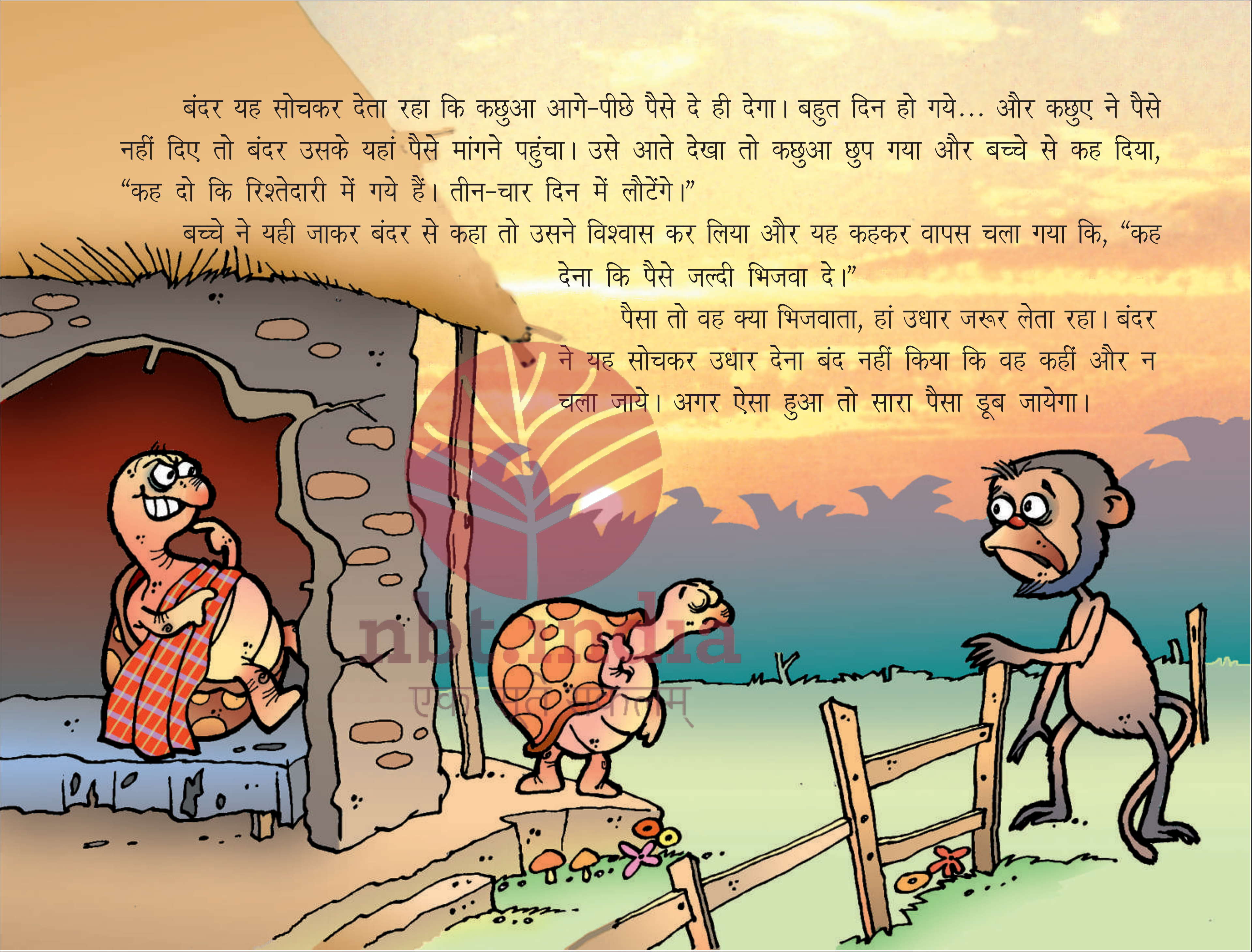
जब-तब वह अपने बच्चे को मक्के का भुट्टा, मूंगफली, आलू, आदि लाने के लिए बंदर के पास भेज देता, “जाओ, बंदर चाचा से ले आओ।”



बंदर यह सोचकर देता रहा कि कछुआ आगे-पीछे पैसे दे ही देगा। बहुत दिन हो गये... और कछुए ने पैसे नहीं दिए तो बंदर उसके यहां पैसे मांगने पहुंचा। उसे आते देखा तो कछुआ छुप गया और बच्चे से कह दिया, “कह दो कि रिश्तेदारी में गये हैं। तीन-चार दिन में लौटेंगे।”

बच्चे ने यही जाकर बंदर से कहा तो उसने विश्वास कर लिया और यह कहकर वापस चला गया कि, “कह देना कि पैसे जल्दी भिजवा दे।”

पैसा तो वह क्या भिजवाता, हां उधार जरूर लेता रहा। बंदर ने यह सोचकर उधार देना बंद नहीं किया कि वह कहीं और न चला जाये। अगर ऐसा हुआ तो सारा पैसा डूब जायेगा।



पैसा नहीं पहुंचा तो बंदर नाराज होकर कछुए के यहां फिर पहुंचा। उसे आता देखकर कछुआ बीमार बनकर लेट गया। उसका बच्चा रोता-रोता बाहर गया, "चाचा जी, आपके भाई बीमार हैं।"

बंदर ने अंदर जाकर देखा तो वह सिर गड़ाये लेटा था। हांफते हुए बोला, "भैया, सब पैसा डाक्टर ले गया, पर कोई फायदा नहीं हो रहा है उसकी दवाई से। जिंदा बच गया तो ठीक होते ही पैसा दे दूंगा।"

बंदर उसे धीरज बंधाकर और उसके जल्दी ठीक होने की कामना करके वापस चला गया तो बाप-बेटा अपने नाटक पर खूब हंसे।

बंदर कई बार लौट चुका तो एक बार अचानक ऐसे पहुंच गया कि उन्हें पता ही नहीं लगा। उसने दरवाजे से आवाज दी, "कछुए भैया, आज तो पैसा लाओ।"

उसकी आवाज सुनकर कछुआ झट पलटकर उलटा लेट गया। उसके बच्चे ने कहा कि पिता कहीं बाहर गये है।

"मैं तो आज पैसा लेकर ही जाऊंगा," कहकर बंदर घर में घुस गया। वहां उलटे पड़े कछुए को देखकर उसने पूछा, "यह क्या है?"

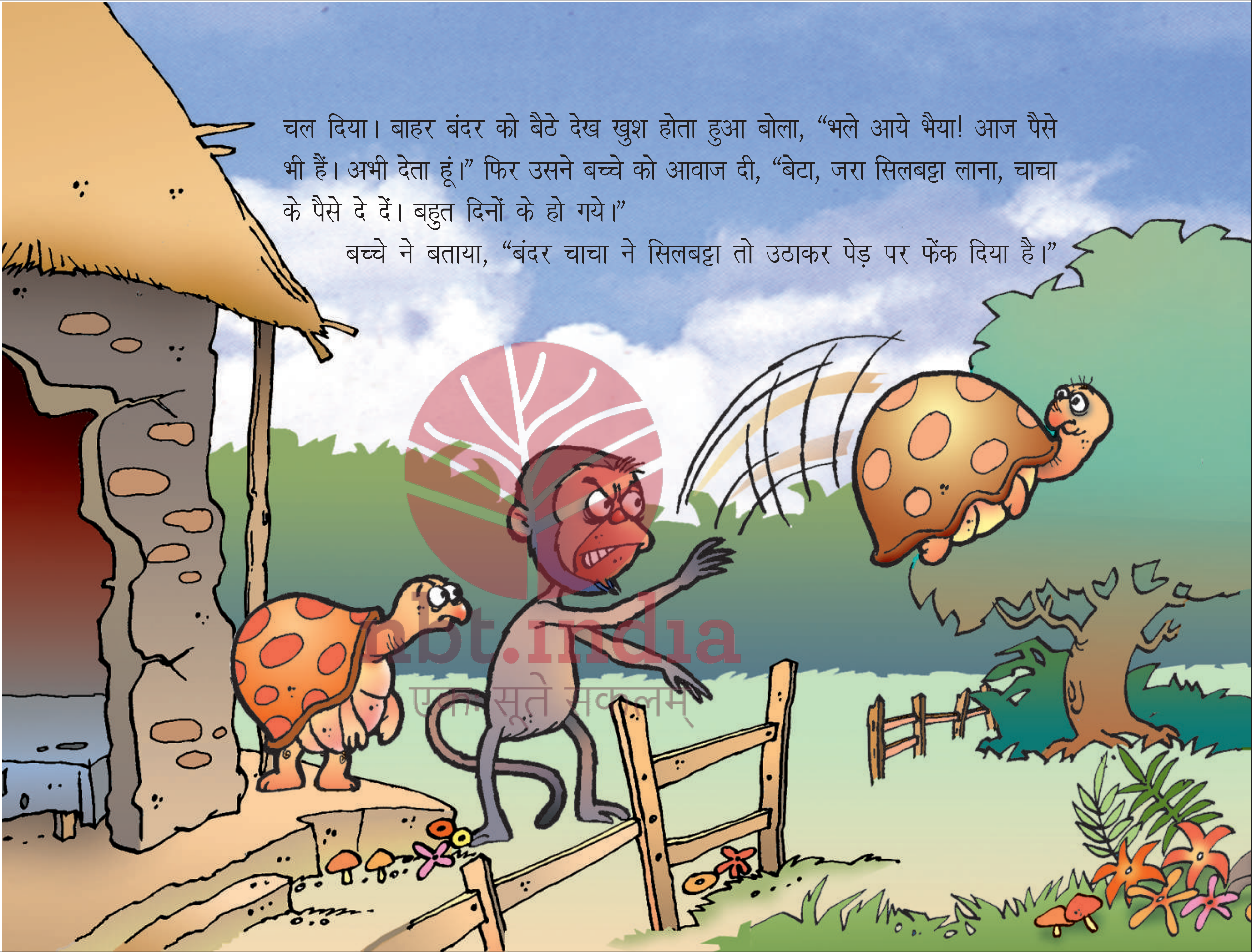
बच्चे ने कहा, "यह हमारा सिलबट्टा है।"

बंदर ने सिलबट्टा बने कछुए को उठाकर जोर से बाहर एक पेड़ पर फेंक दिया और बाहर बैठकर कछुए के आने की राह देखने लगा।

कछुआ पेड़ से होता हुआ दूर जाकर गिरा। फिर जल्दी से उठकर तेज कदमों से घर की ओर

चल दिया। बाहर बंदर को बैठे देख खुश होता हुआ बोला, “भले आये भैया! आज पैसे भी हैं। अभी देता हूं।” फिर उसने बच्चे को आवाज दी, “बेटा, जरा सिलबट्टा लाना, चाचा के पैसे दे दें। बहुत दिनों के हो गये।”

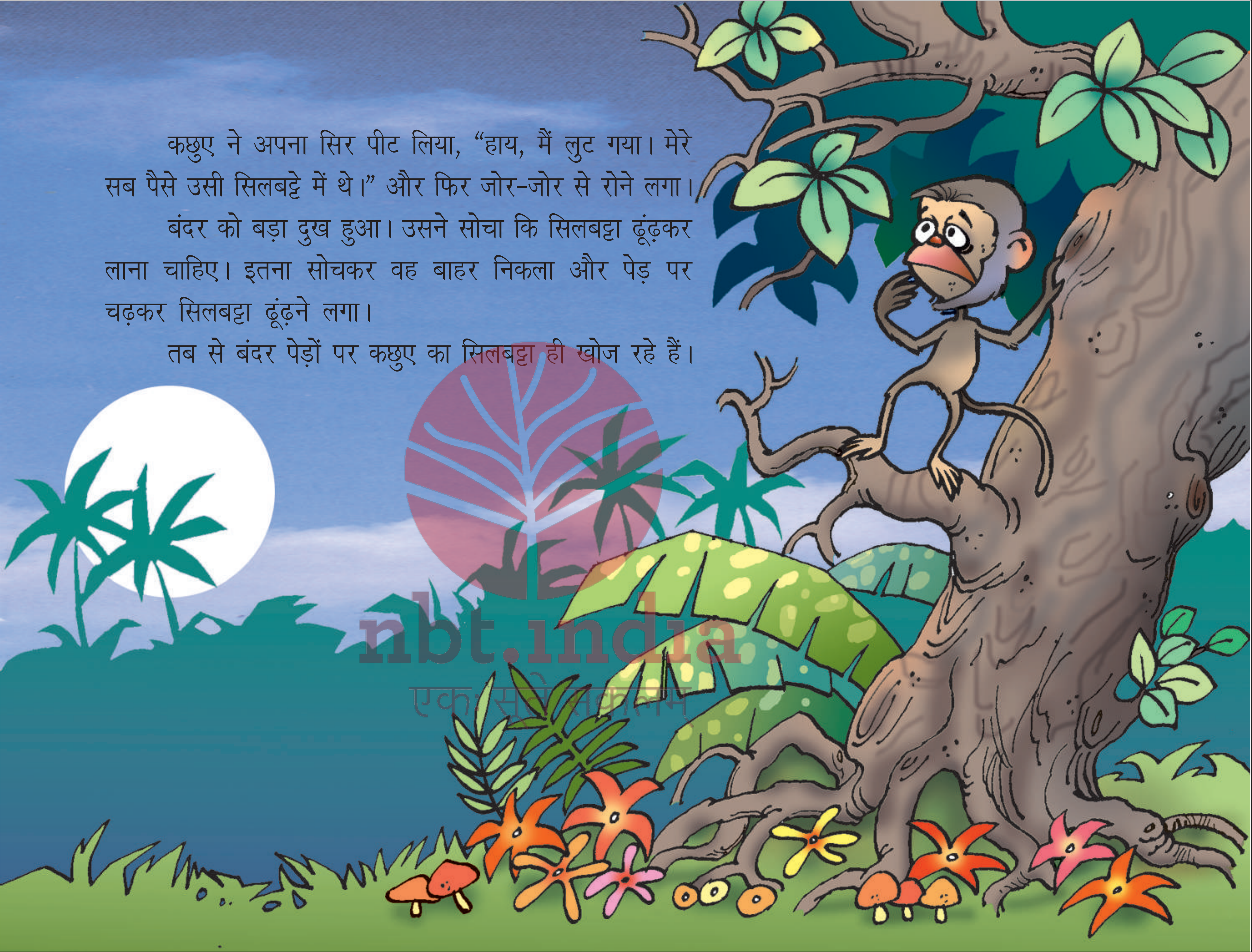
बच्चे ने बताया, “बंदर चाचा ने सिलबट्टा तो उठाकर पेड़ पर फेंक दिया है।”



कछुए ने अपना सिर पीट लिया, “हाय, मैं लुट गया। मेरे सब पैसे उसी सिलबट्टे में थे।” और फिर जोर-जोर से रोने लगा।

बंदर को बड़ा दुख हुआ। उसने सोचा कि सिलबट्टा ढूंढ़कर लाना चाहिए। इतना सोचकर वह बाहर निकला और पेड़ पर चढ़कर सिलबट्टा ढूंढ़ने लगा।

तब से बंदर पेड़ों पर कछुए का सिलबट्टा ही खोज रहे हैं।





nbt.india

एकः सूते सकलम्

रैक्मो प्रेस प्रा. लि., नई दिल्ली द्वारा मुद्रित